SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 3, Issue-2, January to March : 2025
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

आत्मतत्व का ज्ञान प्रगट करती हुई रचना ‘दल दरिया में डुबकी देना’

गुंसाई शिवानी अनिलगर

गुजरात और राजस्थान के गौरवशाली संत शिरोमणी डुंगरपुरीजी महाराज ने अपने शुभ कर्म फल से इस भूमि को पावन किया है। संत डुंगरपुरीजी का जन्म राजस्थान के मारवाड़ में हुआ था। उनके जन्म और मृत्यु के समय की सुनिश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं हे किंतु उनकी रचना में प्रायोजित शब्दावली और लोककथा अनुसार उनका कालखंड का ईस 1850 ओर 1900 माना जाता हे। उनके जीवन को लेकर अनेक जनश्रुति प्रसिद्ध हैं। एक जनश्रुति के अनुसार उनका जन्म मारवाड़ में पुरोहित परिवार में हुआ था। कई लोग मानते हे कि डूंगरपुरीका जन्म दलित परिवार में हुआ था । एक ओर जनश्रुति के मुताबिक वो भरवाड़ परिवार में जन्मे। उनकी माताजी का नाम रूडी देवी ओर पिताजी का नाम मावजी था। संतजन के जीवन की ये विशेषता रही ही के उन्होंने कभी अपने जीवन में माता–पिता और गांव के बारे में कोई भी जीकर नहीं किया। अपने पूर्व जीवन के बारे में मौन रखा है। डुंगरपुरीजी ने जीवंत समाधि गुजरात के पालनपुर शहर के अमीरगढ़ गांव में ली। आज भी लोग बड़ी आस्था से उनकी समाधि के दर्शन करते हे। डुंगरपुरीजी के संत जीवन का प्रारंभ संत श्री भावपुरी के पास दीक्षा लेकर हुआ। भावपूरीजी गोस्वामी पूरी नामक शाखा के संत है। बूंद गुरु–शिष्य परंपरा अनुसार डुंगरपुरीजी गोस्वामी समाज के संत है। डुंगरपुरीजी महाराज द्वारा लिखित भजन रचनाओं में गुजराती, राजस्थानी, मारवाड़ी और मिश्र भाषा का प्रयोग दिखाई पड़ता है। ये उनकी भारत भर मे की हुए यात्राओं का प्रभाव है। आज भी डूंगरपुरी महाराज की भजन रचनाएं भजन मंडली मे गाई जाती है। उनकी भजन रचनाओं में शामिल योगक्रिया के वर्णन योगक्रिया के प्रवर्तक गुरु गोरखनाथकी बानी की याद दिलाती है। गोरखनाथ प्रणीत योगसाधना पिंड में परमब्रह्म शोधन की प्रक्रिया हे। इस प्रक्रिया में इंगला पिंगला सुषुम्ना जैसी नाड़ी से कुंडलीनि शक्ति जागरण आत्म शोधन क्रिया वर्णित है। ये योगक्रिया सिर्फ नाथ परंपरा से दीक्षित साधु जानते है। योगक्रिया आत्म खोज परमतत्व की खोज परमतत्व को पाने की अलौकिक अनुभूति का वर्णन डूंगरपुरीजिकी रचना में शामिल है। इस आधार पर ये सत्य पुरवार होता है कि वे नाथ साधना पद्धति के जानकार थे। यहां उनकी एक रचना के आस्वाद से ये बात ओर स्पष्ट हो सकती है।

“दल दरिया में डुबकी देना
मोती रे लेना गोती ए जी जी
खारा समंदर में छिप बसत हे
भात भातरा मोती ए जी,
ए मोती कोई मरजीवा माने
नहीं पुस्तक, नहीं पोथी रे
दल दरिया में डुबकी देना।
मुखा कमल पर मरघा कमल हे
ता पर गंगा होती ए जी,
तन कर साबू, मन कर पानी
धोई लेना हरदारी धोती रे।
दल दरिया में डुबकी देना
रनुकार में जनूकार हे
जनूकार में ज्योति ए जी ,

गुंसाई शिवानी अनिलगर, शोधछात्र, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी, पाटण, ईमेल : shivanigusai21@gmail.com

ए ज्योति अभेपद होती,
वहां हे एक मोती रे।
दल दरिया में डुबकी देना
नव दुवारा,दशमी खड़की,
खड़की में एक खड़की ए जी ,
ए खड़की कोई सतगुरु खोले,
कूंची उनरा घरकी रे ।
दल दरिया में डुबकी देना
डाबी इंगला,जमनी पिंगला,
नूरत सूरत कर जोती,
देव डूंगरपुरी बोलिया,
हु हरखे हार परोती,।
दल दरिया में डुबकी देना।।"

_ देव डूंगरपुरी

गोरखनाथने अपनी साधना पश्चात प्रमुख सूत्र दिया 'पिंडे सो ब्रह्मांडे ,ब्रह्मांडे सो पिंडे' इस प्रक्रिया को पिंड शोधन प्रक्रिया कहते हे। ये देह में पूरे ब्रह्मांड के दर्शन को प्रगट करती है। सूक्ष्म तत्वज्ञान की पिपासा में पिंड मे ब्रह्म शोधन प्रकिया प्रारंभ हुई। उस अनुभूति कों अपनी वाणी में डूंगरपुरी महाराज ने प्रगट किया है।

दल दरिया में डुबकी मोती लेना गोती का भावार्थ अपने शरीर में व्याप्त आत्मतत्व का ज्ञान प्राप्त करना है। मानव शरीर नश्वर हे ओर आत्मा अमर है। यहां पे मोती का प्रतीक प्रायोजित हुआ है जो आत्मा के संदर्भ में है। खारा समंदर से इस भवसागर को प्रगट किया हे भवसागर में जीवन रूपी छिप हे जिसमें अमूल्य मोती मिलते है। इस लिए ये देह की रचना जान लेना साधना पद्धति में अति आवश्यक है। जो इस देह मे आत्मतत्व की खोज कर लेता हे वो परमतत्व को प्राप्त कर लेता है।

"मुखा कमल पे मरघा कमल हे"

मूलाधार चक्र से कुंडलिनी शक्ति उर्ध्वगमन करती हे ओर ब्रह्मरनध्र तक पहुंचती हे जहां पर ज्ञान की गंगा होती हे जहां पर दिव्य ज्योति प्रकाशित हो उठती हे ओर अनाहत नाद की धुन सुनाई देती है। इस लिए डूंगरपुरी ने जणुकार (ज्योति) के साथ रणुकार की बात की है।

"नव दुवार दशमी खड़की

ए खड़की कोई सतगुरु खोले"

मानवदेह में नव द्वार हे जिसमेसे एक खड़की हे ओर ये खड़की हे जिसका गुप्त ज्ञान सतगुरु द्वारा दिया गया "शबद" गुरगम से मिलता है। संत साधना में गुरु के शब्द अति मूल्यवान है। सतगुरु बिना इस भवसागर की नैया कौन पार लगावे। पोथी शास्त्र जहां नई पहुंच सकते वहां गुरु वचन से अनुभूति से पहुंचा जा सकता है।

"डाबी इंगला जमनी पिंगला

नूरत सूरत कर जोती।।"

"गोरक्षशतक" अनुसार 72000 नाडी है। इसमें 10 प्रमुख है। साधना में श्वास के आवन जावान पर ध्यान केंद्रित किया जाता है इंगला चंद्र नाडी है ओर पिंगला सूर्य नाडी से सुषुम्ना जाग्रत होती है। सुषुम्ना मूलाधार से होकर मस्तक तक पहुंचती है। कुंडलिनी जागृत हो कर सुषुम्ना के बंध द्वार खोलती हे तब सुषुम्ना ऊर्ध्वगामी बनती हे ओर साधक को साधना की पूर्ति कि अनुभूति होती है। परमतत्व कि अलौकिक अनुभूति से चित आनंद से भर जाता है ओर मोती पिरोते पिरोते माला बनती है।

डूंगरपुरी महाराज ने एक पद रचना मे गहरे आध्यात्मिक जगत का वर्णन किया है। ये रचना साधक को मूल रूप से साधना प्रक्रिया आसान भाषा में समझाती है। साधक पढ़ा लिखा नहीं भी हो पर वो इस साधना से परमज्ञान अर्जित कर सकता है। पदावलि रचना छोटी ओर राग के साथ कंठस्थ करना आसान थी उस वजह से इतने सालों के बाद भी ये रचना अभी भी लोगो के दिलो में अपनी जगा बनाए हुए है। गोरखनाथ द्वारा लिखित भजन

"सोई माणेक मेरी नजरू में आया

ज्या रे देखूं छाया तेरी राम !"

माणेक मोती शोध लेने से राम मिल जायेगे ये बात गोरखनाथ ने भी अपनी रचनामे कही हे ।

संदर्भ सूची :

(1) नाथ संप्रदाय, डॉ. मधुकर रामदास जोशी
(2) नाथ संप्रदाय: दर्शन कथा नाथपंथ की, डॉ अरुण कुमार त्रिपाठी
(3) સંપૂર્ણ નાથ સંપ્રદાય, ભાણદેવ
(4) 'સત કેરી વાણી' , મકરંદ દવે